eISSN 2581-8996

[Date]

THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)

A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL

Vol. 3, Issue 02, July 2020

पाल क्रुगमैन :– अर्न्तराष्ट्रीय अर्थशास्त्र में पूर्णता में अपूर्णता का समावेश

1डा0 सरनपाल सिंह

1सह प्रोफेसर, अर्थशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय तिलहर, शाहजहांपुर, उ0प्र0

Received: 13 June 2020, Accepted: 27 June 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

पाल क्रुगमैन अर्न्तराष्ट्रीय अर्थशास्त्र में नयी व्यापार सिद्धान्त (NTT-New Trade Theory) के जनक के रूप में जाने जाते हैं।

हालांकि यह सही है कि इस सिद्धान्त के विकास का पूरा श्रेय उन्हें या सिर्फ उन्हें ही देना न्याय संगत नही है क्योंकि न तो अभी इस सिद्धान्त का पर्याप्त विकास हो पाया है और न ही इस सिद्धान्त के प्रर्वतक अभी तक इसे व्यवहार में लाने योग्य सिद्धान्त समझते हैं।

संकेतशब्द– पाल क्रुगमैन, अर्न्तराष्ट्रीय अर्थशास्त्र, पूर्णता में अपूर्णता का समावेश, अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार का सिद्धान्त , परम्परागत व्यापार सिद्धान्त।

भूमिका

पाल क्रुगमैन अर्न्तराष्ट्रीय अर्थशास्त्र में नयी व्यापार सिद्धान्त (NTT-New Trade Theory) के जनक के रूप में जाने जाते हैं। हालांकि यह सही है कि इस सिद्धान्त के विकास का पूरा श्रेय उन्हें या सिर्फ उन्हें ही देना न्याय संगत नही है क्योंकि न तो अभी इस सिद्धान्त का पर्याप्त विकास हो पाया है और न ही इस सिद्धान्त के प्रर्वतक अभी तक इसे व्यवहार में लाने योग्य सिद्धान्त समझते है।

अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार का सिद्धान्त मुख्य रूप से इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करता है कि दो देशों में व्यापार क्यों होता है और अन्ततः इस व्यापार का दोनो देशों पर क्या प्रभाव पडता है। स्मिथ, रिकार्डो एवं हैबरलर का सिद्धान्त इस व्यापार का कारण दोनो देशों के मध्य विभिन्नताओं या तुलनात्मक लागतों में अन्तर को मानता है और हेक्सचर ओहलिन का सिद्धान्त उत्पादन साधनों की प्रचुरता में भिन्नता को मानता है। सैम्युलसन–स्टापलर प्रमेय इस व्यापार के कारण अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर उत्पादन कारकों की कीमतों में एकीकरण की प्रवृत्ति पर ध्यान एकाग्र करती है। इन सभी

eISSN 2581-8996

[Date]

THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)

A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL

Vol. 3, Issue 02, July 2020

परम्परावादी सिद्धान्तों (Orthodox Trade Theory OTT) का निष्कर्ष यह है कि श्रम प्रधान देश, श्रम प्रधान वस्तुओं का निर्यात करेगा और इस प्रकार से श्रम का अप्रत्यक्ष निर्यात करेगा, जिसके कारण श्रम की कीमतें उस देश में उपर उठना शुरू हो जायेगी और धीरे धीरे बढ़कर पूंजी की कीमतों के बराबर हो जायेगी। दूसरें देशों में इसी प्रकार पूंजी की कीमत बढ़कर श्रम की कीमतों के बराबर हो जायेगी। (Fector Price equalization)। इस प्रकार साधन कीमतों में व्यापार के प्रभाव के रूप में समान होने की प्रवृत्ति पायी जाती है। अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार के यह सिद्धान्त पूर्ण प्रतियोगिता तथा पैमाने के स्थिर प्रतिफलों की मान्यता के आधार पर प्रतिपादित किये गये। इस सिद्धान्त के अनुसार भिन्न देशों में (अर्थात विकसित व अल्पविससित देशों के बीच) व्यापार की मात्रा समान देशों (विकसित–विकसित व विकसित–अल्पविकसित देशों) की तुलना में ज्यादा होनी चाहिए।

परन्तु इस सिद्धान्त के साथ समस्या यह है कि यह लिमोन्टीफ पैराडाक्स (जिसके अनुसार श्रम प्रधान देश, श्रम प्रधान वस्तुओं का व पूंजी प्रधान देश, पूंजी प्रधान वस्तुओं का निर्यात आवश्यक रूप से नही करता बल्कि अनेक जगह इसका उल्टा होता है) की व्याख्या करनें में सक्षम नही है। इसके साथ यह सिद्धान्त अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार के वर्तमान पैटर्न की व्याख्या करनें में असफल रहा जिसके अनुसार विश्व का अधिकांश व्यापार (80–85 प्रतिशत) विकसित देशों के मध्य होता है और एक जैसे ही अभिरूचियों, व्यापार फलनों, तकनीक का स्तर वाले देशों में लगभग एक जैसे ही उत्पादों का आयात निर्यात होता है।

व्यापार का यह पैटर्न परम्परागत सिद्धान्तों के माध्यम से समझना मुश्किल हो रहा था। हालाकि इस पैटर्न की एक स्वाभाविक व्याख्या यह भी हो सकती है कि अल्पविकसित देशों का तकनीकी स्तर उन वस्तुओं को उत्पन्न करनें में, खासकर उस मात्रा व उस गुणवत्ता का उत्पादन करनें में असमर्थ रहे है जिसकी विकसित देशों में मांग है। या यूं भी कहा जा सकता है कि विकसित देशों की मांग का पोषण केवल विकसित देशों द्वारा ही किया जा सकता है और नतीजों के तौर पर उनके उत्पादों की मांग लोच अत्यधिक कम रही है और फलस्वरूप आज भी विश्व व्यापार में कोई बड़ा हिस्सा हासिल करने में असमर्थ रहे है।

दीक्षित स्टिगलिट्स उपभोक्ता अभियान इसी बात की ओर संकेत करता है कि विकसित देशों में उपभोक्ता गुणवत्ता के साथ साथ वैरायटी की और अधिक ध्यान दे रहे है जो जाहिर तौर पर उन्ही के जैसे विकसित देश उत्पन्न करने में सक्षम है न कि अल्पविकसित देश; और इसी कारण विकसित देशों में आपस में। इस बढ़ते व्यापार में हिस्सा उन्ही अल्पविकसित देशों का बढेगा जो विकसित देशों में वांछित वस्तुऐं जैसे इंजीनियरिंग, मैन्यूफैक्चरिंग, बी.पी.ओ., आई.टी. जैसे क्षेत्रों में गुणवत्ता युक्त आपूर्ति (Supply) करनें में सझम होगें। भारत और चीन का तेजी से बदलता व्यापार पैटर्न इस बात की पुष्टि करता है।

eISSN 2581-8996

[Date]

THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)

A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL

Vol. 3, Issue 02, July 2020

पाल क्रुगमैन का अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार नवीन सिद्धान्त (New Trade Theory या NTT) इसी दीक्षित स्टिगलिट्स फंक्शन पर आधारित है। इस दीक्षित स्टिगलिट्स अधिमान क्रम के मुताबिक उच्च आयकृत देशों में धन प्रभाव के चलते उपभोक्ता चीजों की किसी एक मानक किस्म को वरीयता देने के स्थान पर वस्तुओं की वैरायटियों का उपभोग करना पसंद करते है। उपभोक्ता अपनी आय का प्रयोग एक ही वस्तु की विविध वैराइटियों का उपभोग करने हेतु करते है फलस्वरूप किसी भी देश में एक ही वस्तु की अनेकानेक वैराइटियों का उपभोग व उत्पादन किया जाता है।

परम्परागत व्यापार सिद्धान्त (OTT या OHS) पूर्ण प्रतियोगिता व पैमाने के स्थिर प्रतिफलों पर आधारित है परन्तु हम जानते है संसार अपूर्ण प्रतियोगिता से संचालित होता है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति इस अपूर्णता का प्रत्येक स्तर पर अनुभव करता है। क्रुगमैन का सिद्धान्त हमें इसी अपूर्ण जगत की वास्तविकताओं के अनुरूप आर्थिक सिद्धान्त का निर्माण करनें का रास्ता दिखाता है।

क्रुगमैन के अनुसार समान देशों में फर्मे लगभग समान तकनीकी व समान कारकों (Factor endowment) का प्रयोग करते हुए समान उत्पादों जो केवल कुछ ही मायनों में विभेदीकृत होते है को अलग अलग ब्रांड नामों के तहत उत्पादित करती है। पुराने व स्थापित ब्रांड एक प्रकार का लगान वसूल करते है। फर्मो का बाजार में प्रवेश व निर्गमन अबाधित रहने के कारण कीमतें प्रतियोगी स्तर पर निम्नतम औसत लागतों पर बनी रहती है।

निर्माण व प्रौद्योगिकीय वस्तुओं में जेनेरिक व नान ब्रांडेड कृषि वस्तुओं की तुलना में लाभ अधिक होता है तथा लगातार तकनीकी उन्नयन के कारण अल्पविकसित देशों के परम्परागत कृषि उत्पादों के विपक्ष में ही व्यापार की शर्ते दीर्धकाल में निर्धारित होती है। (Singh & Paul Publish 1950, oecampo & Parra 2006, 2008.) औद्योगिक क्षेत्र में तकनीकी विकास के कारण पैमाने के बढ़ते प्रतिफल लागू होते है। IRS (Increasing Return to Scale) या पैमाने के बढ़ते प्रतिफलों के कारण फर्मो का उत्पादन बढ़ाने व निर्यात करने का प्रोत्साहन रहता है। फर्मे, जिस वैराइटी या उत्पाद की मांग अपने देश में ज्यादा होती है वही IRS को तहत उत्पादन को बढ़ाकर निर्यात करती है। बढ़ते हुए उत्पादन के कुछ वाह्य प्रभाव भी होते है। यदि सरकार नीतिगत रूप से धनात्मक वाह्य प्रभाव वाले उत्पादों व उद्योगों के बड़ावा दे (अर्थात स्त्रातातिक(stralagic) या रणनीति व्यापर नीति), तो घरेलू स्तर की फर्मे अर्न्तराष्ट्रीय स्तर अपने प्रतियोगियों को पछाड़ कर एकाधिकारिक या अल्पाधिकारिक रूप में अपना विकास कर लेती है इस प्रकार 'नेशनल चैम्पियनों' के संरक्षण की नीति अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार के अल्पाधिकारिक स्वरूप को जन्म देती है।

सरकार आयात कर, टेरिफ, व निर्यात सब्सिडी के माध्यम से चुनिंदा उद्योगो को बढ़ावा देकर सामान्य साम्य की जगह आंशिक साम्य की नीति अपना सकती है। परन्तु यह नीति केवल कुछ

eISSN 2581-8996

[Date]

THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)

A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL

Vol. 3, Issue 02, July 2020

मान्यताओं के तहत ही सही हो सकती है। इसके लिये सर्वप्रथम 'नेशनल चैम्पियनों' का अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर पहले ही प्रतिस्पर्धा योग्य होना आवश्यक है। दूसरा सरकार को उद्योग जगत की वाहयताओं की सही जानकारी होना आवश्यक है। तीसरा रणनीतिक प्रोत्साहन प्रदान करने में किसी प्रकार की स्थानीय प्रेशर ग्रुपों की राजनीति नही होनी चाहिए अर्थात रणनीतिक प्रोत्साहन वाहयताओं की ठीक ठीक पहचान व तत्संबंधी आर्थिक तर्को से संचालित होने चाहिए। चौथा यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है कि कुछ क्षेत्रों या फर्मो को रणनीतिक प्रोत्साहन देने से अन्य क्षेत्रों/फर्मो पर कोई बुरा असर तो नहीं पड़ता अर्थात उन्हें आवश्यक साधनों की मात्रा में कमी या उनके आवश्यकता क सांधनों की कीमत में वृद्धि तो नही हो जाती और यह क्षेत्र परिणामी रूप से हानि की स्थिति में तो नही पहुंच जाता यदि ऐसा होता है तो सरकार की नीति से फायदा कम व नुकसान ज्यादा हो सकता है।

पांचवा यह भी सुनिश्चित करना होगा कि चूंकि गत्यात्मक स्केल या पैमानों का प्रतिफलों से सम्बन्धित धनात्मक वाहयताऐं प्रमुख रूप से ज्ञान में निवेश या शोध व विकास (Research & Development, R&D) पर निर्भर है (अर्थात यदि, R&D में निवेश करके एक बार उत्पाद में कोई बदलाव या सुधार लाया जाता है तो इस फिक्स लागत की औसत लागत उत्पादन में वृद्धि के साथ साथ घटती जाती है), तो यदि इन क्षेत्रों में सब्सिडी या प्रोत्साहन देती है तो उसके घनात्मक प्रभाव नयी फर्मो के प्रवेश द्वारा समाप्त न कर दिये जाये या विदेशी अर्थव्यवस्था को निर्यात न कर दिये जाये। ऐसी दशा में नेशनल चैम्पियनों का विकास या तो बाधित हो जायेगा या उसका कोई फायदा घरेलू अर्थव्यवस्था या उपभोक्ताओं को ना मिलकर विदेशी उपभोक्ताओं/फर्मो को मिलेगा।

क्रुगमैन के अनुसार आज का जगत अल्पाधिकारिक प्रतियोगिता का है जिसमें अत्याधिक अनिश्चितता है और कोई भी माडल यह भविष्यवाणी करनें में असमर्थ रहता है कि अन्तिम रूप से फर्मे किस प्रकार की रणनीति अपनायेगी और उसके क्या परिणाम होगें। फर्मे सहयोगी व असहयोगी, प्रतियोगिता या कार्टेल दोनो ही प्रकार से व्यवहार कर सकती है। अतः स्त्रातंतिक या रणनीतिक व्यापार सिद्धान्त किस सीमा तक लाभप्रद होगा, कहना मुश्किल हे। ज्ञान जनित वाहयताओं को भी ठीक ठीक नापना संभव नही है। इसके अतिरिक्त उपरोक्त वर्णित मान्यताऐं भी अपूर्ण जगत में कभी सत्य नही होती। इन्ही सब कारणों से क्रुगमैन रणनीतिक व्यापार सिद्धान्त (NTT) के पक्ष में खुलकर सामने नही आते तथा व्यवहारिक रूप से स्वतंत्र व्यापार को ही ज्यादा अच्छा समझते है अगर सभी राष्ट्र यही सिद्धान्त अपना लें तो न केवल ट्रेड–वार होगी बल्कि सभी संलग्न राष्ट्रों को अनिवार्य रूप से नुकसान भी उठाना पड़ेगा। परन्तु इतना अवश्य कहना पड़ेगा कि क्रुगमैन ने पूर्ण प्रतियोगिता व स्वतंत्र व्यापार की मान्यता में निर्णायक सेंध अवश्य लगा दी है।

क्रुगमैन की दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि नयी आर्थिक भूगोल (New Economic Georaphy) की प्रस्तावना भी है। किस प्रकार से कोई राष्ट्र एक कृषि प्रधान देश से संरचनात्मक परिवर्तन करता

eISSN 2581-8996

[Date]

THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)

A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL

Vol. 3, Issue 02, July 2020

हुआ एक विकसित औद्योगिक राष्ट्र बन जाता है यह समझाना एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। दो समान देश किस प्रकार से समय के क्रम में छोटी छोटी भिन्नताओं के उदय के साथ आश्चर्यजनक रूप से भिन्न होते चले जाते है इसकी व्याख्या करनें का उन्होनें प्रयास किया है। यदि दो बिल्कुल समान देश है और किसी वजह से औद्योगिक श्रमिक एक जगह छोडकर दूसरे देश में बसने लगते है तो दूसरी जगह का बाजार बढ़नें लगता है (Migration from South to North) दूसरी जगह अर्थात North में इस बाजार में आपूर्ति करने के लिये फर्मो का संकेन्द्रण बढ़ने लगता है (Home market effect) South या पहली जगह बाजार सिकुडने लगता है। North में Variety Product का उत्पादन बढ़ने लगता है श्रमिक और फर्मे परिवहन लागतों की बचत करने तथा उपभोग में अधिक वैरायटी शामिल करनें के लिए नार्थ में संकेन्द्रित होने लगते है। (नार्थ में लोकल या स्थानीय कम्पटीशन, यदि सशक्त हो तो इस प्रवृत्ति के विरूद्ध कार्य करता है।) फिर भी मोटे तौर पर यदि परिवहन लागते या यूँ कहे कि उत्प्रवासन लागते ज्यादा हो, तो संकेन्द्रण की यह प्रक्रिया अधिक प्रभावी नही हो पाती। परन्तु अन्यथा की स्थिति में, एक क्षेत्र में ही सारे उधोग संकेन्द्रित हो जाते है तथा दूसरा क्षेत्र पिछड़ जाता है।

पहले क्षेत्र में श्रमिकों की वास्तविक आय भी ज्यादा हो जाती है। एक क्रान्तिक परिवहन लागतों के स्तर पर सममित विविधीकृत साम्य अस्थिर हो जाता है और संकेन्द्रण की प्रक्रिया तेज हो जाती है। लेकिन यदि परिवहन लागतें अत्यधिक गिरती चली जाये तो संकेन्द्रण की इस प्रक्रिया के सशक्त होने के बाद पुनः पहले प्रदेश (South) में निवेश बड़ा सकती है और वहां भी वास्तविक आय कुछ सीमा तक पुनः बढ़ सकती है। वर्तमान में भूमण्डलीयकरण के युग में एशिया व लैटिन अमेरिकी देशों में बढ़ता विदेशी निवेश व विदेशी पूंजी का आगमन इसी तथ्य की ओर कुछ संकेत करता है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों देशों में औद्योगिक संकेन्द्रण क्रुगनर के माडल में इस बात पर निर्भर करता है कि श्रमिकों का उत्प्रावसन सर्वप्रथम किस देश से किस देश में होता है। यह घटना किसी भी कारण से हो सकता है। अतः किस देश का विकास किस रूप में होता है यह मात्र विशुद्ध रूप से एक ऐतिहासिक घटना या दुर्धटना मात्र का नतीजा है। यह घटनाऐं या आर्थिक कारक सरकारों द्वारा प्रायोजित हो सकते है अतः इस सन्दर्भ में रणनीतिक व्यापार सिद्धान्त या सरकारी हस्तक्षेप बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण सिद्धान्त हो सकता है।

क्रुगमैन के माडलों में एक समान देशों में Reciprocal dumping के द्वारा उपभोग के कल्याण में वृद्धि, एकाधिकारी मूल्य से प्रतियोगी मूल्यों की स्थापना व दोनों देशों में कुल मिलाकर अधिक वैराइटियों की उपलब्धि पर जोर दिया गया है। यह North – North ट्रेड की अधिकता की व्याख्या करते हुए बताते है कि अगर एक देश की BMW कार प्रसिद्ध है तो वह BMW का ही निर्यात करेगा और अगर दूसरे की LEXUS कार प्रसिद्ध है तो अपने उपभोक्ताओं की संतुष्टि के

eISSN 2581-8996

[Date]

THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)

A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL

Vol. 3, Issue 02, July 2020

लिए वह LEXUS का आयात भी करेगा। अतः एक ही देश से कारे निर्यात भी की जायेगी व आयात भी की जायेंगी। यह प्रक्रिया दोनों देशों के उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर अधिक वैरायटी के उपभोग को प्रोत्साहित करती है व उपभोक्ता के कल्याण में वृद्धि करती है।

कुल मिलाकर क्रुगमैन का सिद्धान्त इस अपूर्ण संसार की अपूर्णताओं की व्याख्या परम्परागत सिद्धान्त की तुलना में अधिक पूर्णता से करता है अतः इसे परम्परागत सिद्धान्त पर एक महत्वपूर्ण विकास माना गया है। NTT सिद्धान्त एक प्रकार से अर्न्तराष्ट्रीय अर्थशास्त्र में शोध एवं विकास के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है और इस प्रकार से यह एक नयी प्रवृत्ति के विकास का संकेत है। व्यवहारिक रूप से इसे उपयोगी बनाने में अभी काफी चुनौतियां है परन्तु फिर भी उसने स्वंतत्र व्यापार की मान्यता को कम से कम सैद्धान्तिक तल पर एक सशक्त चुनौती अवश्य दी है और इस कार्य के लिये क्रुगमैन को नोवेल से सम्मानित करना एक अर्थशास्त्र के विकास के लिये एक प्रोत्साहनकारी कदम है।

References –

1. 'End His depression now' – A book by Paul Krugman ISBN 978-0-34508-7, Paper book A New York Times bestseller, April 2012
2. 'The Return of Depression Economics and the crisis of 2008'- A book by Paul Krugman ISBN 978-0-393-33780-8, 224 pages paper book September 2009.
3. 'International Trade: Theory and Policy' A book by Sleve Swranovic, Gerge Washington University date 210, ISBN 13:978-1-9361264-4-6 Publisher – Saylor Foundation.
4. International Trade: Theory and Evidence by James Markugen it at. Publisher MC Glaw-Hill/Irwin 1994, ISBN/ASIN 007040447X, ISBN 9780070404472
5. 'Understanding Trade Faience; Theory and Evidence from Transaction level data by Jae Bin AHN, IMF Preliminary Draft, Nov. 204
6. 'Columnist Biography: Paul Krugman' The New York Times. January 30, 2017.
7. Dunham, Chris (July 14, 2009) "In search of a Man selling Krug" Genealogy wise. com, July 22, 2009.
8. 'The Increasing Returns Revolution in Trade and Geographic creature, December 8, 2008 by Paul Krugman, Prince for University, Wood now wills on School, NJ08544-1013, PP-335-346.
9. 'Increasing Returns in A Comparative Advantage world', Paul Krugman, November 2009, PP1-11 Retrieved from https://www.pnuceton.edu.
10. "New Trade Theories and Developing Comprise Policy and Technological Implication" by Samuel wang we, United Nations University, Working Paper no. June 1993 page 21-25. Retrieved from https://arclieveunu.edu
11. 'The New Trade Theory : Implications for Policy Analysis by John Pomery, Policy Economics and Analysis PP 159-185 recent Economics Thought Series (PETH : Volume 23) DOI https://doi.org/10.1007/978-94-011-3866-6-8 Published by Springer ISBN 978-94-010-5720-2
12. "Paul Krugman : Theory in Service of Economic Policy" by Steven Coisard in L' Economic Politique, Volume 41, Issue 2009, pages 46 to 57. Translated from French by JPD system https://doi.org/10.3917/Leeo 041.0046 Uploaded on Cairn-int-into on 18-08-2014.